



Page No:.....

Date: .../.../...

By SATYABHAMA CHANDRA

Department of Psychology

APSM College, Barauni, Begusarai

LNMU, Sarbhanga, Bihar

B.A-I (H) Paper-I

Date - 13/04/21

3. Sensory - Perceptual Processes

B.A - I Hons

Q.1. What is sensation? And discuss the structure and functions of visual senses.
(संवेदन क्या है? तथा दृष्टि संवेदन की संरचना तथा कार्यों की विवेचना करें।)

Ans → Sensation → शरीर के संवेदी अंगों से वातावरण के उद्दीपकों के बारे में मिलने वाले पर्याप्त मात्रा का संवेदन की संज्ञा ही अती है।

● Visual Senses :-

दृष्टि संवेदन के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंग आँख होता है जिसकी संरचना में तीन परतें होती हैं - श्वेत परत, मध्य परत तथा दृष्टि परत।

नेत्रगोलक के सबसे ऊपरी अंग को श्वेत परत कहा जाता है जिसकी संरचना कड़ी एवं अपारदर्शी होती है। इसका रंग श्वेत होता है। श्वेत परत का अगला भाग पारदर्शी होता है जो उभरा हुआ होता है। इसी से प्रकाश आँख में प्रवेश करता है। वस उभरे हुए भाग को Cornea कहा जाता है। Cornea में रक्त की आपूर्ति नहीं होती है।

मध्यपरत श्वेतपरत के नीचे होता है। इसका रंग प्रायः काला होता है। कुछ व्यक्तियों में मध्यपरत का रंग भूरा भी होता है। मध्यपरत के आगे का भाग भी उभरा हुआ हुआ होता है, जिसे परिहारिका कहा जाता है। परिहारिका के बीच में एक गोल छेद होता है जिसे पुतली कहा जाता है। पुतली के पीछे लेंस होता है और लेंस में भी रक्त की आपूर्ति नहीं होती है। लेंस दूर की चीजों को देखने के लिए बड़ा तथा मजबूत का चीज को

देखने के लिए होता ही जाता है। लेंस का होता या बड़ा होना इसके दोनों किनारों पर स्थित मसिफेरीय जिले परमायिकी मासपेशी कहा जाता है, पर निर्भर करता है।

दृष्टिपटल नेत्र गोलक की सबसे आगे की सतह से है तथा दृष्टि संवेदन से सबसे महत्वपूर्ण है। दृष्टिपटल में दो तरह की प्रकाशग्राही कोशिकाएँ होती हैं - शलाकाओं (rods) तथा स्तब्धियों (cones)। 1996 के अनुसार प्रत्येक आँसू के दृष्टिपटल में शलाकाओं की संख्या करीब 120 मिलियन तथा स्तब्धियों की संख्या करीब 8 मिलियन होती है।

दृष्टिपटल में एक विशेष धँसी हुई स्थान है जहाँ सिर्फ स्तब्धियाँ ही काफी अधिक मात्रा में पाई जाती हैं। इस स्थान को फोव्वा कहा जाता है। 1996 के अनुसार कोशिकाओं में लगभग 150,000 स्तब्धियाँ होती हैं।

प्रत्येक दृष्टिपटल की आगे की भागों से निकलने वाले तंत्रिका एक-दूसरे का काम करने हुए विपरीत मस्तिष्किय गोलार्धे आधीय कार्य दृष्टिपटल से निकलने वाले तंत्रिका दाहिने गोलार्धे तथा बायें दृष्टिपटल से निकलने वाले तंत्रिका बायें गोलार्धे में पहुँचता है। इस एक फॉस बिन्दु को optic chiasma कहा जाता है। अन्त में तंत्रिका आवेग दृष्टि कार्टेक्स के विशेष भाग अर्थात् दृष्टिपालि में पहुँचता है और 0 धर्मि का दृष्टि संवेदन होती है।